बात है राज की कुछ ऐसी है जिंदगी की,
सच में शिक्षा व उसका स्वरूप है सगी बहन सरीखी।

20/20

Dr. [illegible] 4/8/17

महिलाओं की शिक्षा का स्वरूप कैसा हो?

स्वतंत्रता के बाद सरकार, महिला संगठनों, महिला आयोगों आदि के प्रयासों से महिलाओं के लिए विकास के द्वार खुले, उनमें शिक्षा का प्रसार बढा जिससे उनमें जाग्रति आई, आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ, परिणामस्वरूप वे प्रगति पथ पर आगे बढी। आज महिलाएँ राजनीति, समाजसुधार, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य, विज्ञान, उद्योग, व्यावसायिक प्रबन्धन, शासन–प्रशासन, चिकित्सा,पुलिस, सेना, कला, संगीत, खेलकूद आदि क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। एक ओर यह परिदृश्य अत्यधिक उत्साहवर्धक है, परन्तु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि आज भी शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। आज लड़कियों को स्नातक या स्नातकोत्तर कराने के बाद उसकी शादी कर देते है, ये नहीं सोचते कि आगे चलकर क्या करेंगी। बचपन से ही उनकी शिक्षा को कोई उद्देश्य नहीं होता है। इसलिए आवश्यकता है समाज को स्त्री शिक्षा के बारे में सोचने की कि स्त्रियों की शिक्षा रचनात्मक ढंग से होनी चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन जायेगी, समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढेगी और समाज की भी प्रगति होगी।

- **महिलाओं की शिक्षा का भावी स्वरूप**– हमारे देश में महिलाओं को पुरूषों के साथ सामाजिक और आर्थिक जिम्मेदारियाँ भी निभानी पड़ती है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा की ऐसी योजना बनाई जाए कि वे घर और बच्चों के उत्तरदायित्व को निभाने के साथ–साथ उनके लीवन को भी सफल बनाने में सहायक हो। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता है।
- **जीवनोपयोगी शिक्षा का समावेष किया जाए**– जिस प्रकार पुरूषों के लिए जीवन की समस्याओं को हल करने वाली शिक्षा की जरूरत है, उसी प्रकार महिलाओं को भी वह शिक्षा चाहिए, जिसे प्राप्त कर वह अपना, अपने परिवार का, बच्चों का जीवन प्रसन्नता, सद्भावना, सम्पन्नता, निरोगता एवं सुखशान्ति से परिपूर्ण बना सके। महिलाओं की शिक्षा में ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए, जो उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का हल खोजने में सहायक हो सके।
- **अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित किया जाये**– महिलाओं को शिक्षा प्रदान करते समय यह देखना होगा कि वे अपने विचारों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर पाती है या नहीं? उनकी अभिव्यक्ति क्षमता को बढाने का प्रयत्न करना होगा। उनकी विवेक बुद्धि को उपयुक्त वाणी मिले, इसके लिए शिक्षकों को प्रयास करना होगा। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित करना होगा कि वे जब बोले तो उनके शब्दों में उनके विचार और उनकी भावनाएँ समुचित रीति से प्रतिबिम्बित हों।
- **व्यक्तित्व विकास की शिक्षा दी जाये**–स्त्री का आत्मविश्वास और स्वाभिमान लौटाया जाय, उसे स्त्रीत्व और सतीत्व के स्तर से ऊपर उठकर सच्चे अर्थो में मानवीय दर्जा हासिल करने में सक्षम बनाया जाए, साथ ही उसे व्यक्तित्व विकास का ऐसा पाठ पढाया जाए, जिससे वह स्वाभिमानी तो बने, लेकिन अंहकारी नहीं। उनका व्यक्तित्व इस तरह से गढा जाए कि वह समाज और परिवार के प्रति जिम्मेदार बने।
- **भारतीय संस्कृति की शिक्षा दी जाये**– नारी शिक्षा को पाश्चात्य चकाचौंध से बचाने की आवश्यकता है। भारतीय भाषा और संस्कृति स्वर्णतुल्य है, यह समझाने का प्रयास शिक्षकों को करना होगा। शिक्षा के माध्यम से उन्हें अपनी भारतीय परम्पराओं की जानकारी मिलनी चाहिए। नारी को ऐसी

शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वह जीवन मूल्यों की हिफाजत कर सके और विकृतियों और विडंबनाओं से समाज को छुटकारा दिला सके।

- **अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम चालाया जाये–** ऐसी महिलाएँ जिनकी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं हो पाई है या जो ऐसे स्थानों पर रहती है जहाँ स्कूल नहीं है, या जो काम में लगी हुई है और दिन के समय स्कूल नहीं जा सकती है, उन सभी के लिए अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम चालाया जायें। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए आधुनिक तकनीकी उपकरणों की सहायता ली जाये।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाय–** महिलाओं के लिए माध्यमिक ओर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरू किए जाएं, ताकि महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। इसमें माध्यमिक स्कूल के बाद स्कूल छोडने वाली छात्राओं को विशेष रूप से अवसर दिया जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर नौकरी और व्यवसाय की संभावना को देखकर पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जाना चाहिए।
- **महिलाओं की शिक्षा में किये जाने वाले पाठ्यक्रम संबंधी सुधार–** महिलाओं के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए, जो स्कूली शिक्षा के साथ–साथ उनकी सभ्यता और संस्कृति से जुडी हुई हो तथा उस शिक्षा के द्वारा वे अपने पैरों पर खडे हो सके। इसलिए महिलाओं की शिक्षा के लिए पाठ्यक्रमों में कुछ सुधार की आवश्यकता है–

1. महिला शिक्षा पाठ्यक्रमों का उद्देश्य व्यावसायिक निपुणता देना ही नहीं हो ना चाहिए, परन्तु कला अथवा हस्तकला भी पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग होना चाहिए। महिलाओं की अभिरूचियों के विकास के लिए संगीत,चित्रकला,नृत्य, गृहविज्ञान आदि विषयों की पढाई का उचित प्रबंध किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, घरेलू अर्थ प्रबंध, वस्त्रों की सिलाई,रंगाई, गृह–व्यवस्था,पुस्तकालय,सांख्यिकी,बागवानी आदि पाठ्यक्रम शुरू किये जाने चाहिए, जो खासतौर से महिलाओं के लिए ही तैयार किए गए हों। इन नये प्रशिक्षणों को युक्तिसंगत ढंग से मानविकी,विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रमों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। अपने परिवार का, बच्चों का जीवन प्रसन्नता, सद्भावना,सम्पन्नता निरोगता एवं सुख शान्ति से परिपूर्ण बना सके। महिलाओं की शिक्षा में ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए, जो उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का हल खोजने में सहायक हो सकें।
3. पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की छबि को अधिक सकारात्मक रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए। महिलाओं के प्रिय त्यौहार, खेल ओर महान नारियों की जीवनियाँ आदि पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित की जानी चाहिए। भाषा और सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की आवश्यकताओं, अनुभवों और समस्याओं का ध्यान रखा जाना चाहिए।
4. पाठ्यपुस्तकों में ऐसी आधाभूत सूचनाएँ दी जानी चाहिए, जिनमें बच्चों महिलाओं के लिए संरक्षात्मक कानून की जानकारी हो तथा संविधान से उनके उदाहरण दिए जाऐं, ताकि वे उसमें निहित सभी अधिकारों और अन्य बुनियादी संकल्पनाओं से परिचित हो सके।
5. वयस्क महिलाओं के लिए संक्षिप्त पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए। यह व्यवस्था विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में की जाये। चूँकि महिलाओं के ऊपर घर की कई तहर की जिम्मेदारियाँ होती है, इसलिए उनकी शिक्षा के लिए कक्षाएँ उपयुक्त समय पर लगाई जाये।

9. महिलाओं को विशेषकर के भारतीय संविधान के विधि कानून कि विभिन्न धाराओं का परिचय मिल सके ऐसी शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करके ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा जाना चाहिये। जिससे ग्रामीण महिलायें भी अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ इस विधि का सहारा लेकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकेंगी।

6. माध्यमिक शिक्षा के बाद विस्तृत व्यावसायिक पाठ्यक्रम होने चाहिए। महिलाओं का व्यावसायिक योग्यता देने के उद्देश्य से इन्हें साधारण शिक्षा के साथ अलग से प्रारंभ किया जाना चाहिए। इनमें इतनी विभिन्नता होनी चाहिए कि वे महिलाओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।
7. गणित और विज्ञान विषय महत्वपूर्ण है। इनके ही द्वारा विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने में पर्याप्त सुविधा मिलती है। अतः जो महिलाएँ गणित और विज्ञान विषय पढती है, उन्हें विशेष प्रोत्साहन मिलना चाहिए।
8. विश्वविद्यालय शिक्षा के बाद विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जाए, जिससे महिलाएँ अधिक से अधिक व्यवसायों में उत्तदायित्व और प्रबंधकों के पद का भार संभाल सके।

उम्मीद करती हूँ कि सरकार और समाज महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण समझकर इस संदर्भ में कोई प्रयास अवश्य करेगें। क्योंकि एक महिला सिर्फ एक महिला ही न होकर एक बेटी, एक वहन, एक बहू,एक माँ, एक सास भी होती है, अर्थात् एक महिला को शिक्षित करके आप इतने सारे रूपों में उसे सम्पूर्णता प्रदान करेंगें।

रमा साबू

98931-51888

Rama Saboo
203, Sai Sagar Apartment, 24-25, Silver Oaks Colony,
Anapurna Road, Indore 452 009
Phone: 0731-2483840 Mobile: 98931 51888